भारतीय महाकाव्य, जिन्होंने सदियों बाद भी अपनी महत्ता नहीं खोई।

डॉ सुरेंदर कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
महाराजा अग्रसेन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी जगाधरी

संस्कृत काव्यशास्त्र में महाकाव्य (एपिकका प्रथम सूत्रबद्ध लक्षण आचार्य (भामह ने प्रस्तुत किया है और परवर्ती आचार्यों में दंडी, रुद्रट तथा विश्वनाथ ने अपने अपने ढंग से इस महाकाव्य (एपिक) सूत्रबद्ध के लक्षण का विस्तार किया है। आचार्य विश्वनाथ का लक्षण निरूपण इस परंपरा में अंतिम होने के कारण सभी पूर्ववर्ती मतों के सारसंकलन के रूप में उपलब्ध है।महाकाव्य में भारत को भारतवर्ष अथवा भरत का देश कहा गया है तथा भारत निवासियों को भारती अथवा भरत की संतान कहा गया है

महाकाव्य के लक्षण

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य के लक्षण इस प्रकार हैं :

जिसमें सर्गों का निबंधन हो वह महाकाव्य कहलाता है। महाकाव्य में देवता या सदृश क्षत्रिय, जिसमें धीरोदात्तत्वादि गुण हों, नायक होता है। कहीं एक वंश के अनेक सत्कुलीन भूप भी नायक होते हैं। शृंगार, वीर और शांत में से कोई एक रस अंगी होता है तथा अन्य सभी रस अंग रूप होते हैं। उसमें सब नाटकसंधियाँ रहती हैं। कथा ऐतिहासिक अथवा सज्जनाश्रित होती है। चतुर्वर्ग धर्म), अर्थ, काम, मोक्षमें से एक महाकाव्य का (फल होता है। आरंभ में नमस्कार, आशीर्वाद या वर्ण्यवस्तुनिर्देश होता है। कहीं खलों की निंदा तथा सज्जनों का गुणकथन होता है। न अत्यल्प और न अतिदीर्घ अष्टाधिक सर्ग होते हैं जिनमें से प्रत्येक की रचना एक ही छंद में की जाती है और सर्ग के अंत में छंदपरिवर्तन होता है। कहींकहीं एक ही सर्ग में अनेक छंद भी होते हैं। सर्ग के अंत – में आगामी कथा की सूचना होनी चाहिए। उसमें संध्या, सूर्य, चंद्रमा, रात्रि, प्रदोष, अंधकार, दिन, प्रातकाल:, मध्याह्न, मृगया, पर्वत, ऋतु, वन, सागर, संयोग, विप्रलंभ, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, संग्राम, यात्रा और विवाह आदि का यथासंभव सांगोपांग वर्णन होना चाहिए) साहित्यदर्पण, परिच्छेद 6,315-324)।

आचार्य विश्वनाथ का उपर्युक्त निरूपण महाकाव्य के स्वरूप की वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध परिभाषा प्रस्तुत करने के स्थान पर उसकी प्रमुख और गौण विशेषताओं का क्रमहीन विवरण उपस्थित करता है। इसके आधार पर संस्कृत काव्यशास्त्र में उपलब्ध महाकाव्य के लक्षणों का सार इस प्रकार किया जा सकता है :

कथानक - महाकाव्य का कथानक ऐतिहासिक अथवा इतिहासाश्रित होना चाहिए।

विस्तार - कथानक का कलवेर जीवन के विविध रूपों एवं वर्णनों से समृद्ध होना चाहिए। ये वर्णन प्राकृतिक, सामाजिक और राजीतिक क्षेत्रों से इस प्रकार संबंद्ध होने चाहिए कि इनके माध्यम से मानव जीवन का पूर्ण चित्र उसके संपूर्ण वैभव, वैचित्र्य एवं विस्तार के साथ उपस्थित हो सके। इसीलिए उसका आयाम (अष्टाधिक सर्गों में) विस्तृत होना चाहिए।

विन्यास - कथानक की संघटना नाट्य संधियों के विधान से युक्त होनी चाहिए अर्थात् महाकाव्य के कथानक का विकास क्रमिक होना चाहिए। उसकी आधिकारिक कथा एवं अन्य प्रकरणों का पारस्परिक संबंध उपकार्य–उपकारक–भाव से होना चाहिए तथा इनमें औचित्यपूर्ण पूर्वापर अन्विति रहनी चाहिए।

नायक - महाकाव्य का नायक देवता या सदृश क्षत्रिय हो, जिसका चरित्र धीरोदात्त गुणों से समन्वित हो – अर्थात् वह महासत्त्व, अत्यंत गंभीर, क्षमावान् अविकत्थन, स्थिरचरित्र, निगूढ, अहंकारवान् और दृढव्रत होना चाहिए। पात्र भी उसी के अनुरूप विशिष्ट व्यक्ति, राजपुत्र, मुनि आदि होने चाहिए।

रस - महाकाव्य में शृंगार, वीर, शांत एवं करुण में से किसी एक रस की स्थिति अंगी रूप में तथा अन्य रसों की अंग रूप में होती है।

फल - महाकाव्य सद्वृत होता है – अर्थात् उसकी प्रवृत्ति शिव एवं सत्य की ओर होती है और उसका उद्देश्य होता है चतुवर्ग की प्राप्ति।

शैली - शैली के संदर्भ में संस्कृत के आचार्यों ने प्राय: अत्यंत स्थूल रूढ़ियों का उल्लेख किया है। उदाहरणार्थ एक ही छंद में सर्ग रचना तथा सर्गांत में छंदपरिवर्तन, अष्टाधिक सर्गों में विभाजन, नामकरण का आधार आदि। परंतु महाकाव्य के अन्य लक्षणों के आलोक में यह स्पष्ट ही है कि महाकाव्य की शैली नानावर्णन क्षमा, विस्तारगर्भा, श्रव्य वृत्तों से अलंकृत, महाप्राण होनी चाहिए। आचार्य भामह ने इस भाषा को सालंकार, अग्राम्य शब्दों से युक्त अर्थात् शिष्ट नागर भाषा कहा है।

संक्षेप में महाकाव्य के विकास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि आरम्भिक युग में नैसर्गिकता का ही काव्य में मूल्य था, वही गुण आदर की दृष्टि से देखा जाता था। कालान्तर में कवियों ने अपने काव्य में अक्षराडम्बर तथा अंलकारविन्यास की ओर दृष्टिपात किया और उन्हें ही काव्य का जीवन मानने लगे।

संस्कृत के महाकाव्य

- रामायण (वाल्मीकि)
- महाभारत (वेद व्यास)
- बुद्धचरित (अश्वघोष)
- कुमारसंभव (कालिदास)
- रघुवंश (कालिदास)
- किरातार्जुनीयम् (भारवि)
- शिशुपाल वध (माघ)
- नैषधीय चरित (श्रीहर्ष)

रघुवंश, कुमारसम्भव, कीरातार्जुनीयम्, शिशुपालवध और नैषधचरित को 'पंचमहाकाव्य' कहा जाता है।

प्राकृत और अपभ्रंश के महाकाव्य

- रावण वही (रावण वध (
- लीलाबई (लीलावती (
- सिरिचिन्हकव्वं (श्री चिन्ह काव्य (
- उसाणिरुद्ध (उषानिरुद्ध (
- कंस वही (कंस वध (
- पद्मचरित
- रिट्थणेमिचरिउ
- महापुराण
- नागकुमार चरित
- यशोधरा चरित

हिंदी के महाकाव्य

- 1. चंदबरदाईकृत पृथ्वीराज रासो को हिंदी का प्रथम महाकाव्य कहा जाता है।
- 2. मलिक मुहम्मद जायसी - पद्मावत
- 3. तुलसीदास - रामचरितमानस
- 4. आचार्य केशवदास - रामचंद्रिका
- 5. मैथिलीशरण गुप्त - साकेत
- 6. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' - प्रियप्रवास
- 7. द्वारका प्रसाद मिश्र - कृष्णायन
- 8. जयशंकर प्रसाद - कामायनी
- 9. रामधारी सिंह 'दिनकर' - उर्वशी
- 10. रामकुमार वर्मा - एकलव्य
- 11. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' - उर्मिला
- 12. गुरुभक्त सिंह - नूरजहां, विक्रमादित्य
- 13. अनूप शर्मा - सिद्धार्थ, वर्द्धमान
- 14. रामानंद तिवारी - पार्वती
- 15. गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश' - तारक वध

तमिल के महाकाव्य

- शिलप्पादिकारम
- मणिमेकलै
- जीवक चिन्तामणि
- वलैयापति
- कुण्डलकेसि

महाकाव्य के सम्बन्ध में पश्चिमी मत

महाकाव्य के जिन लक्षणों का निरूपण भारतीय आचार्यों ने किया, शब्दभेद से उन्हीं से मिलती-जुलती विशेषताओं का उल्लेख पश्चिम के आचार्यों ने भी किया है। अरस्तू ने त्रासदी से महाकाव्य की तुलना करते हुए कहा है कि "गीत एवं दृश्यविधान के अतिरिक्त (महाकाव्य और त्रासदी) दोनों के अंग भी समान ही हैं।" अर्थात् महाकाव्य के मूल तत्व चार हैं – कथावस्तु, चरित्र, विचारतत्व और पदावली (भाषा)।

कथावस्तु

कथावस्तु के संबंध में उनका मत है कि

- (1) महाकाव्य की कथावस्तु एक ओर शुद्ध ऐतिहासिक यथार्थ से भिन्न होती है ओर दूसरी ओर सर्वथा काल्पनिक भी नहीं होती। वह प्रख्यात जातीय दंतकथाओं पर) आश्रित) होनी चाहिए और उसमें यथार्थ से भव्यतर जीवन का अंकन होना चाहिए।
- (2) उसका आयाम विस्तृत होना चाहिए जिसके अंतर्गत विविध उपाख्यानों का समावेश हो सके। उसमें अपनी सीमाओं का विस्तार करने की बड़ी क्षमता"होती हैक्योंकि " त्रासदी की भांति वह रंगमंच की देशकाल संबंधी सीमाओं में परिबद्ध नहीं होता। उसमें अनेक घटनाओं का सहज समावेश हो सकता है जिससे एक ओर काव्य को घनत्व और गरिमा प्राप्त होती है और दूसरी ओर अनेक उपाख्यानों के नियोजन के कारण रोचक वैविध्य उत्पन्न होजाता है।
- (3) किंतु कथानक का यह विस्तार अनियंत्रित नहीं होना चाहिए। उसमें एक ही कार्य होना चाहिए जो आदि मध्य अवसान से युक्त एवं स्वतपूर्ण हो। समस्त उपाख्यान : इसी प्रमुख कार्य के साथ संबद्ध और इस प्रकार से गुंफित हों कि उनका परिणाम एक ही हो।
- (4) इसके अतिरिक्त त्रासदी के वस्तुसंगठन के अन्य गुण पूर्वापरक्रम --, संभाव्यता तथा कुतूहल—भी महाकाव्य में यथावत् विद्यमान रहते हैं। उसकी परिधि में अद्भुत एवं अतिप्राकृत तत्व के लिये अधिक अवकाश रहता है और कुतूहल की संभावना भी महाकाव्य में अपेक्षाकृत अधिक रहती है। कथानक के सभी कुतूहलवर्धक अंग, जैसे स्थितिविपर्यय, अभिज्ञान, संवृति और विवृति, महाकाव्य का भी उत्कर्ष करते हैं।

पात्र

महाकाव्य के पात्रों के सम्बंध में अरस्तू ने केवल इतना कहा है कि "महाकाव्य और त्रासदी में यह समानता है कि उसमें भी उच्चतर कोटि के पात्रों की पद्यबद्ध अनुकृति रहती है।" त्रासदी के पात्रों से समानता के आधार पर यह निष्कर्ष निकालना कठिन नहीं कि महाकाव्य के पात्र भी प्राय: त्रासदी के समान – भद्र, वैभवशाली, कुलीन और यशस्वी होने चाहिए। रुद्रट के अनुसार महाकाव्य में प्रतिनायक और उसके कुल का भी वर्णन होता है।

प्रयोजन और प्रभाव

अरस्तू के अनुसार महाकाव्य का प्रभाव और प्रयोजन भी त्रासदी के समान होना चाहिए, अर्थात् मनोवेगों का विरेचन, उसका प्रयोजन और तज्जन्य मन:शांति उसका प्रभाव होना चाहिए। यह प्रभाव नैतिक अथवा रागात्मक अथवा दोनों प्रकार का हो सकता है।

भाषा, शैली और छंद

अरस्तू के शब्दों में महाकाव्य की शैली का भी "पूर्ण उत्कर्ष यह है कि वह प्रसन्न (प्रसादगुण युक्त) हो किंतु क्षुद्र न हो।" अर्थात् गरिमा तथा प्रसादगुण महाकाव्य की शैली के मूल तत्व हैं और गरिमा का आधार है असाधारणता। उनके मतानुसार महाकाव्य की भाषाशैली त्रासदी की करुणमधुर अलंकृत शैली से भिन्न, लोकातिक्रांत प्रयोगों से कलात्मक, उदात्त एवं गरिमावरिष्ठ होनी चाहिए।

महाकाव्य की रचना के लिये वे आदि से अंत तक एक ही छंद – वीर छंद – के प्रयोग पर बल देते हैं क्योंकि उसका रूप अन्य वृत्तों की अपेक्षा अधिक भव्य एवं गरिमामय होता है जिसमें अप्रचलित एवं लाक्षणिक शब्द बड़ी सरलता से अंतर्भुक्त हो जाते हैं। परवर्ती विद्वानों ने भी महाकाव्य के विभिन्न तत्वों के संदर्भ में उन्हीं विशेषताओं का पुनराख्यान किया है जिनका उल्लेख आचार्य अरस्तू कर चुके थे। वीरकाव्य (महाकाव्य) का आधार सभी ने जातीय गौरव की पुराकथाओं को स्वीकार किया है। जॉन हेरिंगटन वीरकाव्य के लिये ऐतिहासिक आधारभूमि की आवश्यकता पर बल देते हैं और स्पेंसर वीरकाव्य के लिये वैभव और गरिमा को आधारभूत तत्व मानते हैं। फ्रांस के कवि आलोचकों पैलेतिए, वोकलें और रोनसार आदि ने भी महाकाव्य की कथावस्तु को सर्वाधिक गरिमायम, भव्य और उदात्त करते हुए उसके अंतर्गत ऐसे वातावरण के निर्माण का आग्रह किया है जो क्षुद्र घटनाओं से मुक्त एवं भव्य हो।

कहते हैं कालचक्र के अनुसार शब्दों का अर्थ और महत्त्व, दोनों बदल जाते हैं। पर यदि हम श्रीमद्भागवतगीता या महाभारत की बात करें, तो लगता है कि समय के बंधन को मात देते हुए यह रचनाएँ सर्वकालिक सत्य बन गयी हैं। जहाँ गीता के उपदेश आज भी बहुमूल्य और जीवन में उतार लेने लायक हैं, वहीं एक लाख से अधिक संस्कृत पदों में विभक्त महाभारत इस बात का प्रतीक है कि हजारों साल पहले आर्यन संस्कृति बहुत विकसित थी। ऐसे ही कुछ अविस्मरणीय महाकाव्यों का वर्णन इस लेख में किया गया है –

1. महाभारत

रचयिता – वेद व्यास, लेखन कार्य – श्री गणेश

महाभारत महाकाव्य के वर्तमान संस्करण में 18 पर्व और एक लाख से अधिक श्लोक लिखित हैं। जय, विजय और भारत इसमें विदित कथा के पुराने संस्करण हैं, जिनसे महाभारत को रचा गया है। आज तक लिखी गयी रचनाओं में यह सबसे बड़ा काव्य है। कौरवों और पांडवों के बीच हुए युद्ध की गाथा कहता यह संस्कृत पद्यसंग्रह 'इतिहास' की श्रेणी में आता है। महाभारत के भीष्म पर्व के 700 श्लोक श्री मद्भगवतगीता के रूप में पढ़े जाते हैं।

संस्कृत में लिखित इस महाकाव्य का लगभग हर भारतीय भाषा में अनुवाद किया जा चुका है। इसके अलावा, महाभारत को अंग्रेज़ी और कई अन्य विदेशी भाषाओं में भी अनुवादित किया गया है। भारत में आज भी इस ग्रन्थ से ली गयी अनेकों कथाएँ कहानियों के रूप में सुनाई जाती है। विदित रहे, धरम ग्रंथों को पढ़ने के शौकीन मुग़ल शासक अकबर ने पर्शियन में इसका अनुवाद कराया था।

2. रामायण

रचयिता – वाल्मीकि

रामायण का अर्थ है 'राम की कथा'। अपने नाम के अनुसार, रामायण अयोध्या नरेश श्री राम की पूरी जीवन कथा और श्री लंका नरेश रावण के साथ हुई उनकी लड़ाई का बहुत विस्तार में वर्णन करती है। इसमें 24 हजार चौपाई हैं, जो कि 7 कांडों में विभक्त है। रामायण के सभी पात्र भारत, श्री लंका, कम्बोडिया, नेपाल, मलेशिया और आस–पास के देशों में आजतक पूजे जाते

हैं। श्री राम सेतु के असली में होने की पुष्टि से रामायण के सत्य कथा पर निर्धारित होने के संकेत मिलते हैं। काव्य में वर्णित नियमों और मानव जीवन के मूल्यों को अभी भी उपयोगी माना जाता है।

ऐसा माना जाता है कि रामायण के तीन सौ से अधिक संस्करण मौजूद हैं। वाल्मीकि रामायण, जो कि इस महाकाव्य का मूलभूल संस्कृत संस्करण है, के अलावा इसके संस्कृत, तमिल, तेलुगु, अवधी, मराठी, उड़िया, गुजराती, कश्मीरी, कन्नड़, इत्यादि संस्करण आसानी से देखे जा सकते हैं। जावा, थाई, बर्मा, श्री लंका, जापान, कम्बोडिया, मलेशिया आदि देशों में भी इसके अनुवाद लोगों द्वारा पढ़े जाते हैं।

3. श्री रामचरितमानस
   रचयिता – तुलसीदास
   श्री रामचरितमानस आज भी भारत में बहुतायत में पढ़ी जाती है। इसका कारण यह है तुलसीदास ने इसे लिखने में अवधी भाषा का प्रयोग किया है, जो हिंदी से काफी मिलती-जुलती है। छंदों और चौपाईयों के रूप में लिखे गए 15वीं सदी की इस रचना को हम वाल्मीकि-लिखित रामायण का सरल और गीतमय अनुवाद मान सकते हैं।
   आध्यात्म रामायण, जो कि ब्रह्मपुराण से अवतरित है, को तुलसीदास की इस रचना का प्रेरणा स्त्रोत माना जाता है। इसकी चौपाइयाँ आज भी जस-की-तस गाई जाती हैं। हालाँकि, इसके हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद भी हैं।
4. कौटिल्य का अर्थशास्त्र
   रचयिता – आचार्य चाणक्य
   अर्थशास्त्र में राजनीति, सरकारों का गठन, शासन के नियम, समाजशास्त्र, नागरिकशास्त्र, युद्ध, अर्थशास्त्र, कृषि, खुदाई, पशुपालन, चिकित्सा और ऐसे ही अनेकों ज़रूरी विषयों पर गूढ़ जानकारी दी गयी है। चाणक्य द्वारा लगभग 300 ईसा पूर्व (2300 वर्ष पहले) लिखे गए इस संस्कृत ग्रन्थ को आज भी राजनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण माना जाता है और अर्थशास्त्री विद्वान् अभी भी इसे पढ़ते हैं। इसके कई हिंदी और अंग्रेज़ी अनुवाद भी मौजूद हैं।

5. शिलप्पादिकारम
   रचयिता – इलांगो अडिगल
   शिलप्पादिकारम तमिल में लिखे गए 5 महाकाव्यों में से एक है। यह संगम साहित्य का हिस्सा है। 'शिलप्पादिकारम' का अर्थ होता है 'एक पायल की कथा'। काव्य तीन अध्यायों और 5270 गीतबद्ध पंक्तियों में लिखा गया है । इसमें मातृसत्तात्मक समाज के साक्ष्य हैं, जो बाद में धीरे-धीरे पितृसत्तात्मक समाज में परिवर्तित हुआ होगा। कण्णगी इस काव्य का मुख्य पात्र है, जो अपने राज्य की गलती से हुई अपने पति की मृत्यु के लिए प्रतिशोध का मार्ग चुनती है। तमिल राज्यों में आज भी इस ग्रन्थ का ख़ास स्थान है।

6. कुमारसम्भवम्
   रचयिता – कालिदास
   यह कवि कालिदास द्वारा लिखा गया एक लम्बा संस्कृत काव्य है, जो शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेन के जन्म के बारे में है। कुमारसम्भवम् में कुल 17 सर्ग् हैं। कुल मिलाकर, यह पार्वती के अनन्य रूपों का चित्रण, ब्रह्मचारी शिव का वर्णन, शिव-पार्वती विवाह आदि की सुन्दर गाथा है। कालिदास के जन्म के समय पर कोई निश्चित मत नहीं होने के कारण इस कृति के लिखे जाने का सही समय पता करना भी कठिन है। इसका हिंदी और इंग्लिश में अनुवाद किया गया है, पर माना जाता है कि यह संस्करण तमिल संस्करण के बराबर प्रभावशाली नहीं हैं।

7. तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास (1511 - 1623) हिंदी साहित्य के महान कवि थे। इनका जन्म सोरों शूकरक्षेत्र, वर्तमान में कासगंज (एटा) उत्तर प्रदेश में हुआ था। कुछ विद्वान् आपका जन्म राजापुर जिला बाँदा (वर्तमान में चित्रकूट) में हुआ मानते हैं। इन्हें आदि काव्य रामायण के रचयिता महर्षि वाल्मीकि का अवतार भी माना जाता है। श्रीरामचरितमानस का कथानक रामायण से लिया गया है। रामचरितमानस लोक ग्रन्थ है और इसे उत्तर भारत में बड़े भक्तिभाव से पढ़ा जाता है। इसके बाद विनय पत्रिका उनका एक अन्य महत्वपूर्ण काव्य है। महाकाव्य श्रीरामचरितमानस को विश्व के १०० सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय काव्यों में ४६वाँ स्थान दिया गया।

8. नाटक

नाटक, काव्य का एक रूप है। जो रचना श्रवण द्वारा ही नहीं अपितु दृष्टि द्वारा भी दर्शकों के हृदय में रसानुभूति कराती है उसे नाटक या दृश्य-काव्य कहते हैं। नाटक में श्रव्य काव्य से अधिक रमणीयता होती है। श्रव्य काव्य होने के कारण यह लोक चेतना से अपेक्षाकृत अधिक घनिष्ठ रूप से संबद्ध है। नाट्यशास्त्र में लोक चेतना को नाटक के लेखन और मंचन की मूल प्रेरणा माना गया है। .

9.महाभारत

महाभारत हिन्दुओं का एक प्रमुख काव्य ग्रंथ है, जो स्मृति वर्ग में आता है। कभी कभी केवल "भारत" कहा जाने वाला यह काव्यग्रंथ भारत का अनुपम धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक और दार्शनिक ग्रंथ हैं। विश्व का सबसे लंबा यह साहित्यिक ग्रंथ और महाकाव्य, हिन्दू धर्म के मुख्यतम ग्रंथों में से एक है। इस ग्रन्थ को हिन्दू धर्म में पंचम वेद माना जाता है। यद्यपि इसे साहित्य की सबसे अनुपम कृतियों में से एक माना जाता है, किन्तु आज भी यह ग्रंथ प्रत्येक भारतीय के लिये एक अनुकरणीय स्रोत है। यह कृति प्राचीन भारत के इतिहास की एक गाथा है। इसी में हिन्दू धर्म का पवित्रतम ग्रंथ भगवद्गीता सन्निहित है। पूरे महाभारत में लगभग १,१०,००० श्लोक हैं, जो यूनानी काव्यों इलियड और ओडिसी से परिमाण में दस गुणा अधिक हैं। हिन्दू मान्यताओं, पौराणिक संदर्भो एवं स्वयं महाभारत के अनुसार इस काव्य का रचनाकार वेदव्यास जी को माना जाता है। इस काव्य के रचयिता वेदव्यास जी ने अपने इस अनुपम काव्य में वेदों, वेदांगों और उपनिषदों के गुह्यतम रहस्यों का निरुपण किया हैं। इसके अतिरिक्त इस काव्य में न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, ज्योतिष, युद्धनीति, योगशास्त्र, अर्थशास्त्र, वास्तुशास्त्र, शिल्पशास्त्र, कामशास्त्र, खगोलविद्या तथा धर्मशास्त्र का भी विस्तार से वर्णन किया गया हैं।

सारांश

भारतीय और पाश्चात्य आलोचकों के उपर्युक्त निरूपण की तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि दोनों में ही महाकाव्य के विभिन्न तत्वों के संदर्भ में एक ही गुण पर बार-बार शब्दभेद से बल दिया गया है और वह है - भव्यता एवं गरिमा, जो औदात्य के अंग हैं। वास्तव में, महाकाव्य व्यक्ति की चेतना से अनुप्राणित न होकर समस्त युग एवं राष्ट्र की चेतना से अनुप्राणित होता है। इसी कारण उसके मूल तत्व देशकाल सापेक्ष न होकर

सार्वभौम होते हैं -- जिनके अभाव में किसी भी देश अथवा युग की कोई रचना महाकाव्य नहीं बन सकती और जिनके सद्भाव में, परंपरागत शास्त्रीय लक्षणों की बाधा होने पर भी, किसी कृति को महाकाव्य के गौरव से वंचित करना संभव नहीं होता।